इंद्रावती सुन्दरबाईने चरणे, श्रीवालाजीनी सेवा करीस वालपण घणे।
सेवा जेहेवो बीजो पदारथ नथी, जाण जोई लेसे वचनज थकी।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) के चरणों में लगकर कहती हैं कि वालाजी की सेवा बड़े प्यार से करूंगी। सेवा के समान और कोई वस्तु नहीं है। जो मन से विचार करके देखेगा, वही इसका लाभ लेगा।

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ६०४ ।।

कत्तण जो द्रष्टांत

खुई सा निद्रडी रे, जे अजां न छडे जीव।
तोहे नी सांगाए न वरे, जे पसां मथे हेडी भाइयां।। १ ।।

इस नींद को आग लग जाए जो अभी तक जीव को नहीं छोड़ती। अभी तक इसकी पहचान नहीं होती, इसलिए अपने ऊपर ऐसी बीत गई।

आंके निद्र उडाणके अदियूं मूजियूं, आंके डियां हिकमी साख।
अंईं अगईं पर पसी करे, हांणे मान सांगायो रे साथ।। २ ।।

तुम्हारी नींद उड़ाने के लिए, हे मेरी बहन! एक दृष्टान्त देती हूं। तुम पहले से ही इसको देखकर, हे साथजी! अपनी बड़ाई का ख्याल रखना।

आतण मंझे जे आवयो, जेडियूं हेरे मिडी।
किंनीनी कींझो कत्तयो, किन न भगी रे भींडी।। ३ ।।

सूत कातने के लिए आंगन में जितनी मिलकर जो सखियां आई हैं—उनमें किसी ने बारीक सूत काता और किसी ने तो रुई की पूनियों की बंधी गड्डी भी नहीं खोली।

कपाइतियूं आवयूं, कतण कोड करे।
केहे केहे संनो कत्तयो, घणो नेह धरे।। ४ ।।

वह हंसते-हंसते सूत कातने के लिए आईं, किन्हीं-किन्हीं ने अधिक चित्त लगाकर बारीक सूत काता।

के बेठियूं मय विच थेई, पण नाडी तंद न चढे।
कत्तणके जे विसरयूं, से उथियूं ओराता धरे।। ५ ।।

कई अभिमान में बैठी हैं और तकले पर सूत नहीं चढ़ाया। जो यहां कातना भूल गई, वह घर जाते समय पछताएंगी।

किंनी कतया सोहागजा, सूतर भरया सेर।
के बेठियूं मय विच थेई, पेर मथे चाडे पेर।। ६ ।।

कइयों ने पति को खुश करने के लिए सेर भर सूत कात डाला। कई पैर पर पैर चढ़ाकर सबके बीच बैठी रहीं।

के तंदू चाडीन तकडूं, लधाऊं ही वेर।
के नारींदयूं भूं अडूं, के मथे चढ्यूं सिर मेर।। ७ ।।

कइयों ने तकले पर ऐसा समय पाकर जल्दी से सूत चढ़ाया, कई धरती की तरफ देख रही हैं। कई पहाड़ों की भांति सिर ऊपर कर बैठी हैं (अहंकार में)।

हिक तंदू नारींदे वियनज्यूं, जमारो सभे वेई।
हिक फेरा डींदे फुटरयूं, पण हथ न छुताऊं पई।। ८ ।।

एक दूसरे का सूत देखकर अपनी उमर गंवाती है और इस प्रकार से एक रूपवती बनकर व्यर्थ घूमती है, पर हाथ से पूनी नहीं छुई।

के अची आतण मंझा, सुतियूं सुख करे।
उथियूं से उचाटमें, जडे सूतर संभारे।। ९ ।।

कई आतन (संसार) में आकर सुख से सोती हैं। जब उनको सूत की याद आएगी तब घबरा कर उठेंगी।

जिनीनी कींझो कतयो, तनके ता डेई।
सा जोर करे महें जेडिए, मरके मंझ बेही।! १० ।।

जिन्होंने अच्छा काता, शारीरिक मेहनत की, वह सब सखियों के बीच में हंसकर बैठेंगी (परमधाम में)।

जिंनी जाचो कतयो, फारी फुकारे।
सा माले मंझ सरतिए, सुहाग लधाई घरे।। ११ ।।

जिन्होंने बारीक सूत काता और बीच में सांस भी नहीं ली, वे सखियों के बीच में खुश होकर घर जाएंगी।

जडे सूतर सभनी न्हारयो, वीयन हथ पाए।
जिंनी मूर न कतयो, पोएसे मोंहों लिकाए।। १२ ।।

जब सबके सूत को धनी हाथ में लेकर देखेंगे, तो जिन्होंने कुछ भी नहीं काता वे मुंह छिपाकर (शर्म से) खड़ी होंगी।

सूतरवारियूं सुहागण्यूं, न्हारीन कर खणी।
हिक डिंनी स्याबासी जेडिए, व्यो मान लधाऊं धणी।। १३ ।।

जिन सुहागनियों ने बारीक सूत काता है, उनका सूत उठा-उठा कर देखेंगी। उनको सखियां शाबासी देंगी और उनका धनी उनको मान देगा।

हिक फेरीन अरट उतावरो, तनके ता डेई।
राती कन उजागरा, सुत्र कतींदियूं पण सेई।। १४ ।।

एक शरीर की ताकत से चरखे को तेजी से घुमाती है और रात को भी जागती है। वही सूत कातेंगी।

जे कन गाल्यूं विचमें, तंद न उकले तिन।
पई रही तिन हथमें, पोए बेठ्यूं फेरीन मन।। १५ ।।

जो बीच में बातें करती हैं, उनसे तांत (तंद, तार) भी नहीं निकलता और पूनी उनके हाथ में ही रह जाती है। फिर पीछे मन को उदास कर बैठेंगी।

सभा विच सरतिए, गाल्यूं कंदियूं बेही।
पण जिंनी कीं न कतयो, तिंनी पर केही।। १६ ।।

सखियों की सभा के बीच में (घर में) बातें करेंगी। जिन्होंने कुछ भी नहीं काता है, उनकी हालत कैसी होगी?

न कीं कत्यो रातमें, न कीं कत्यो डींह।
से सांणे मंझ सरतिए, मोंह खणदिंयूं कींह।। १७ ।।

जिन्होंने न रात में काता और न दिन में काता, वह सखियों के बीच में कैसे मुंह उठाएंगी?

अदी रे संनो थूलो अघयो, जे कीं कत्याऊं।
पण किंनी विचथी विसर्यो, पई हथ न छुताऊं।। १८ ।।

कइयों ने मोटा, बारीक या अधिक काता। सूत तो काता, किन्तु कइयों ने हाथ से पूनी भी नहीं छुई और यहां आकर सब भूल गईं।

तिंनी सांणे विच सरतिए, पोए मिहीणां लधाऊं।
न तां चेताणवारिए बंग लाथा, परी परी करे धाऊं।। १९ ।।

वे घर में सखियों के बीच में ताने सहेंगी, इसलिए चेतावनी देकर अपने फर्ज को उतारती हूं। बार-बार पुकार कर रही हूं।

आंके धांऊं सुणंदे धणीज्यूं, जमारो सभे वेई।
अंईं अगियां थींदियूं अणसर्यूं, अंईं कतो को न बेही।। २० ।।

हमारी सारी उम्र तुमको धनी की वाणी सुना-सुनाकर बीत गई। तुम आगे चलकर पछताओगी। यहां बैठकर सूत क्यों नहीं कातती?

जिंनी अज न कतयो, सा रींदियूं सेई।
जडे गाल्यूं कंदयूं पाणमें, जेडियूं सभे बेही।। २१ ।।

जिन्होंने आज सूत नहीं काता है वह जब अपनी सखियों में बैठकर बातें करेंगी तो वह रोएंगी।

हिक गिनंदयूं सुहाग सुलतानजा, सुहागणियूं सेई।
से कर खणी गालियूं, कंदयूं विच बेही।। २२ ।।

एक अपने धनी का सुख लेगी। वही सुहागिन है। वही सबके बीच में बैठकर हाथ ऊंचा उठाएगी।

जिंनी कीं न जाणयो, तेहे हथ न छुती पई।
कोड करे घणवे आवई, पण उनी हाम रही।। २३ ।।

जिन्होंने कुछ नहीं जाना और हाथ से पूनी भी नहीं छुई वे बड़ी खुशी के साथ आयी थीं, पर उनकी चाहना बाकी रह गई।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ६२७ ।।

खुईसो भरम जो घेंण, जे लाथो लहे न कींय।
अंख उघाडे सओ कुछण, पुण वरी तींय ज्यूं तींय।। १ ।।

आग पड़े भ्रम की गहरी नींद (नशे) को, जो उतारे नहीं उतरती, थोड़ा सावधान होकर देखा भी, पर फिर ज्यों की त्यों हो जाती है।

हिक त्रकू झोरीन ताव में, फोकट फेरा डींन।
हिक झोडा लगाईन पाणमें, अदी रे उनी न जातो कींन।। २ ।।

एक गुस्से में आकर तकले को तोड़ देती है और बेकार में घूमती है। एक ऐसी है जो आपस में झगड़ा कराती है, हे बहन! उनका कुछ नहीं जाता।